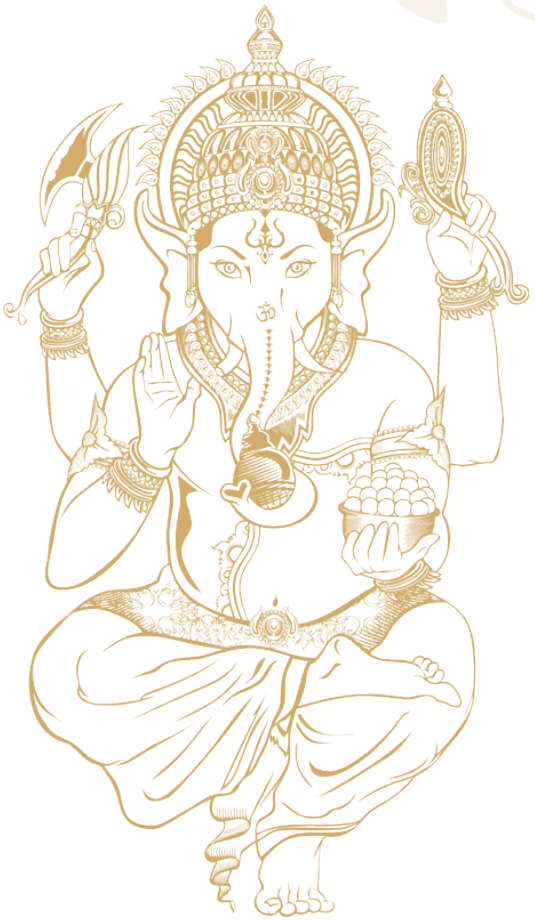

n

l

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121498701

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121498701 Date: 06/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
30/01/1998	जन्म तिथि	15/07/1999
शुक्रवार	दिन	गुरुवार
घंटे 08:15:00	जन्म समय	09:00:00 घंटे
घटी 02:16:31	जन्म समय(घटी)	08:47:27 घटी
India	देश	India
Kangra	स्थान	Jullundur
32:04:00 उत्तर	अक्षांश	31:18:00 उत्तर
76:16:00 पूर्व	रेखांश	75:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:24:56	स्थानिक संस्कार	-00:27:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:20:23	सूर्योदय	05:33:11
17:56:21	सूर्यास्त	19:32:54
23:49:45	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:51

कुम्भ	लग्न	सिंह
शनि	लग्न लग्नाधिपति	सूर्य
कुम्भ	राशि	कर्क
शनि	राशि-स्वामी	चन्द्र
शतभिषा	नक्षत्र	आश्लेषा
राहु	नक्षत्र स्वामी	बुध
2	चरण	3
वरियान	योग	सिद्धि
तैतिल	करण	तैतिल
सा-सात्विक	जन्म नामाक्षर	डे-डेम
कुम्भ	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
शूद्र	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
अश्व	योनि	मार्जार
राक्षस	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
मेष	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
राहु 11वर्ष 6मा 27दि		02:25:52	कुंभ	लग्न	सिंह	11:00:26	बुध 5वर्ष 5मा 10दि	
शनि		16:10:17	मक	सूर्य	मिथु	28:23:22	शुक्र	
28/08/2025		11:25:33	कुंभ	चंद्र	कर्क	25:43:47	24/12/2011	
27/08/2044		09:53:39	कुंभ	मंगल	तुला	09:50:04	24/12/2031	
शनि	30/08/2028	00:43:11	मक	बुध व	कर्क	15:27:23	शुक्र	25/04/2015
बुध	11/05/2031	04:54:44	कुंभ	गुरु	मेष	08:31:00	सूर्य	24/04/2016
केतु	18/06/2032	25:34:41	धनु व	शुक्र	सिंह	07:26:00	चन्द्र	24/12/2017
शुक्र	19/08/2035	21:28:00	मीन	शनि	मेष	21:32:59	मंगल	23/02/2019
सूर्य	31/07/2036	16:54:27	सिंह व	राहु	कर्क	19:08:43	राहु	23/02/2022
चन्द्र	01/03/2038	16:54:27	कुंभ व	केतु	मक	19:08:43	गुरु	24/10/2024
मंगल	10/04/2039	14:56:59	मक	हर्ष व	मक	21:52:34	शनि	24/12/2027
राहु	14/02/2042	06:12:30	मक	नेप व	मक	09:25:52	बुध	24/10/2030
गुरु	27/08/2044	13:46:25	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	14:12:28	केतु	24/12/2031

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:45 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:51

लग्न-चलित

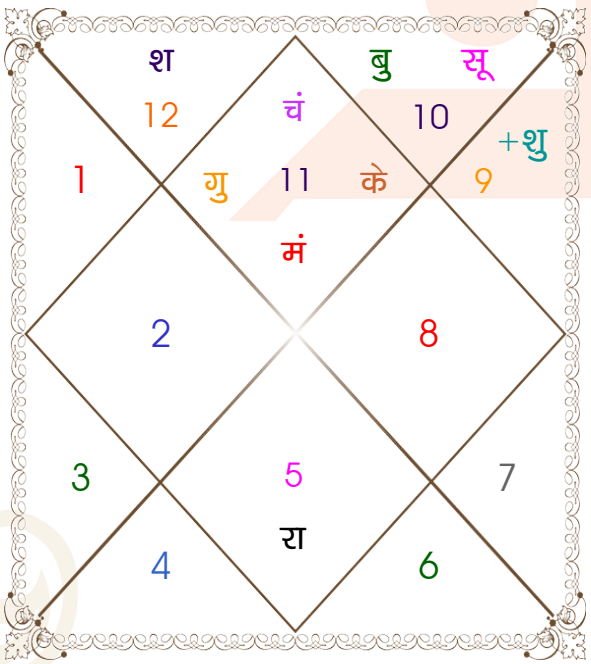

लग्न-चलित

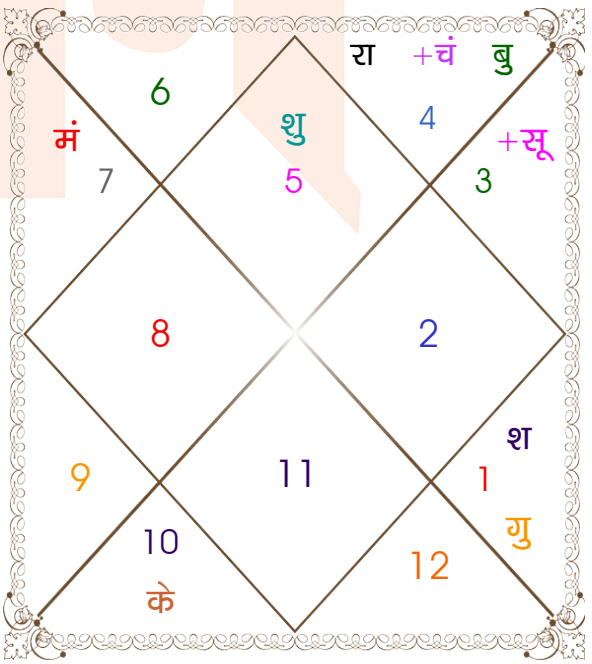

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	चन्द्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	19.00		

कुल : 19 / 36

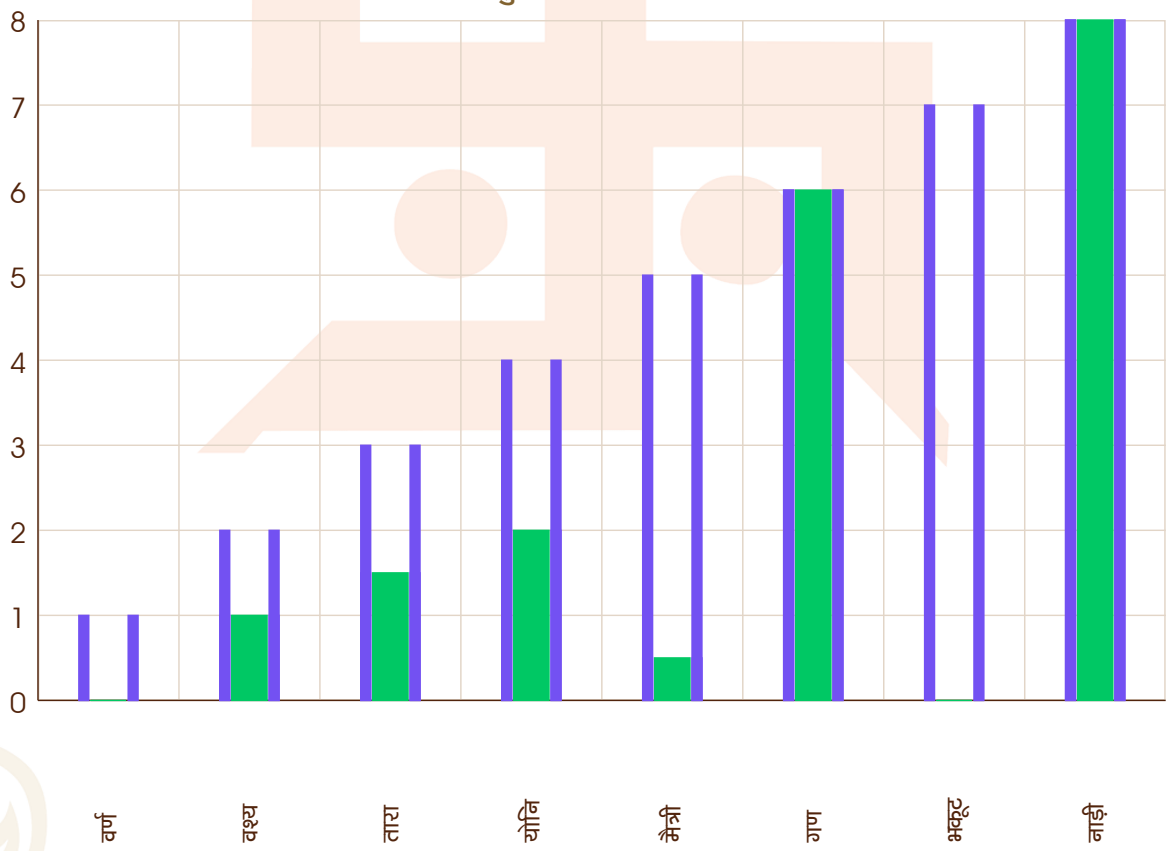

अष्टकूट मिलान

भकूट ोष कष्टदायक है क्योंकि ोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

n का वर्ग मेष है तथा । का वर्ग श्वान है। इन ोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार n और । का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

n मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली ोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र n कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक ोष प्रभावहीन हो जाता है।

। मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में। एक मंगलीक हो और ूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक ोष ाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल । कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक ोष कट जाता है।

n तथा । में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक ोष न होने के कारण ोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

n का वर्ण शूद्र है तथा l का वर्ण ब्राह्मण है। क्योंकि l का वर्ण n के वर्ण`l ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण nोनों के बीच हमेशा अहं का टकराव होगा।l हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि`l ग्रसित रहेगी तथा हमेशा स्वयं को पति`l अधिक होशियार lमझती रहेगी। कन्या की यही श्रेष्ठता का स्व अहसाl उसके पति एवं बच्चों के विकाl को बाधित कर रहेगा। lाथ ही n के अन्दर हीन भावना घर कर जायेगी।

वश्य

n का वश्य द्विपn अर्थात मनुष्य है एवं l का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर nोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि nोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंn बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने nोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें n एवं l दोनों lामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। lामान्यतः n l पर नियंत्रण स्थापित करने में lमर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि n हमेश l के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

n की तारा वध तथा l की तारा क्षेम है। n की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। n बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलाl की आदतों का शिकार हो lकता है। n को शराब एवं ड्रग की लत लग lकती है किंतु l लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य`l उसे lुधारने का प्रयाl करती रहेगी। इl प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम lार्थक हो lकता है।

योनि

n की योनि अश्व है तथा l की योनि मार्जार है। अर्थात nोनों की योनि lमान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात lम lंबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण nोनों के बीच आपसी lमझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में lहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। nोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह lकता है। lाथ ही nोनों के बीच अविश्वाl की भावना भी बनी रहेगी। nोनों एक nूसरे को lंदेह की भावना`l nेखेंगे जिससे nोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। nोनों के बीच आपसी lमझ की कमी भी रहेगी अतः nोनों के बीच वैचारिक मतभेn भी हो lकते हैं। lंभव है कि nोनों के बीच अवैध lंबंध को लेकर lंदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो lकता है। बात-बात में nोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो lकता है। वर या कन्या में`l कोई भी विश्वासघात भी कर lकता है। जिसके कारण nोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो lकता है।

इनको अपने जीवन में अत्याधिक ।घर्ष के उपरांत ही ।फलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजू◌ इनको अपने जीवन में ।फलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की ।भावना है। जिसके कारण ◌ोनों को ।मय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के◌ोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। ◌ोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। ◌ोनों के बीच रोमां। एवं ◌ेक में रुचि की कमी भी रह ।कती है। कई बार वाद-विवा◌ में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण ।मय-समय पर धन हानि भी हो ।कती है। आपा में प्रेम एवं ◌ौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इ। प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न ।मान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ◌ का राशि स्वामी । के राशि स्वामी ◌ शत्रु का ।बंध रखता है। जबकि । का राशि स्वामी ◌ के राशि स्वामी के ।थ ।म रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार ◌ खराब मिलान है। ज्योतिष की ◌ृष्टि ◌ यि◌ एक ।थी का राशि स्वामी ◌ूसरे के लिए शत्रु किंतु ◌ूसरा उसे ।म मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। ◌ोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह ।कता है। ऐसा भी हो ।कता है कि यह बहा कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो ।कती है।

गण

◌ का गण राक्षा है तथा । का गण भी राक्षा है। अर्थात । का गण ◌ के गण के ।मान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण ◌ एवं । दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापस◌ एक जैसे होंगे। यद्यपि कि ◌ोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श ।बित होंगे।

भकूट

◌ से । की राशि षष्ठम भाव में स्थित है तथा । से ◌ की राशि अष्टम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक ◌ोष लग रहा है। जिसके कारण ◌ लाइलाज बीमारी ◌ ग्रस्त हो ।कते हैं तथा अक्सर उनके जलने अथवा ◌ुर्घटनाग्रस्त होने की ।भावना बनी रहेगी।। को स्वास्थ्य ।बंधी ।मस्याएं हो ।कती हैं तथा परिवार के ।दस्यों ◌ वैमनस्य होने की ।भावना भी रहेगी। पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभे◌ रह ।कते हैं तथा अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे। ◌ोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति पूरे परिवार के लिए ।मस्या एवं पीड़ा बन जायेगी। मुकदमेबाजी होने ◌ अलगाव एवं तलाक की ।भावना भी रहेगी।

नाड़ी

n की नाड़ी आद्य है तथा l की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात nोनों की नाड़ी lमान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की nृष्टिे nोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इl मिलान में शरीर के nो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का lतुलन होता है। n की आद्य नाड़ी तथा l की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, nम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं lमझदारी की द्य ोतक हैं। जिसके कारण आपकी lतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

n की राशि वायुतत्व युक्त कुम्भ तथा । की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। वायु एवं जलतत्व में नैसर्गिक ।मानता तथा मित्रता होने के कारण इनके ।बंधों में मधुरता रहेगी तथा स्वभावगत ।मानताएं भी विद्यमान होंगी फलतः वैवाहिक जीवन ुखमय रहेगा। अतः मिलान शुभ रहेगा।

n की राशि का स्वामी शनि तथा । की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर ।म एवं शत्रुराशियों में स्थित है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति के प्रभाव ो इनके मध्य मतभेn अधिक तथा ।मता का भाव अल्प रहेगा। ।थ ही एक ूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान ंगे जिससे परस्पर तनाव एवं कटुता का भाव होगा। n और । के मध्य प्रेम तथा ।हानुभूति के भाव की न्यूनता रहेगी तथा ुख ुख में भी एक ूसरे को ।हयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन विशेष ुखी नहीं रहेगा ।

n और । की राशियां परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट ोष माना जाता है। इसके प्रभाव ो उपरोक्त अशुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा अनावश्यक मतभेn विरोध एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे ।बंधों में कटुता की प्रबलता रहेगी। ।थ ही एक ूसरे की कमियों की विशेष ध्यान रहेगा तथा आलोचनात्मक ृष्टि कोण भी होगा। अतः ऐसी स्थिति में n और । का ाम्पत्य जीवन अशांति पूर्ण रहेगा।

n का वश्य मानव तथा । का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक विषमता होने के कारण अभिरूचियों में भिन्नता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएं भी अलग रहेंगी। फलतः काम ।बंधों में भी एक ूसरे को ।न्तुष्ट तथा प्रसन्न रखने में असमर्थ रहेंगे जिससे ाम्पत्य ।बंधों में भी कटुता का भाव उत्पन्न होगा।

n का वर्ण शूद्र तथा । का वर्ण ब्राह्मण है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं में भी विभिन्नता रहेगी। n की प्रवृति किसी भी कार्य को परिक्षम पूर्वक करने होगी लेकिन । धार्मिक शैक्षणिक तथा अन्य ।त्कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगी।

धन

n और । दोनों की तारा परस्पर ।म है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा ।मान्य गति ो धन एवं लाभ अर्जित करने में ोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी ।म ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम ो प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई ुष्प्रभाव नहीं होगा। इ। प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की ।भावना नहीं होगी परन्तु ।मान्य जीवन धनऐश्वर्य ो युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके ।थ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा

आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप॰ ।न्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

n की नाड़ी आद्य तथा । की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण इन पर नाड़ी ोष का प्रभाव नहीं रहेगा जिससे किसी गंभीर ।मस्या का ।मना नहीं करना पड़ेगा परन्तु मंगल का । के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव होगा जिससे उनको गर्भपात ंबंधी परेशानी की ंभावना होगी तथा धातु ंबंधी रोगों॰ भी यदा कदा कष्ट की प्राप्ति होगी। ।थ ही मासिक धर्म ंबंधी परेशानी का भी यदा कदा ।मना करना पड़ेगा। अतः मंगल के इ। दुष्प्रभाव को कम करने के लिए । को नियमित रूप॰ हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवा। करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की ृष्टि॰ n और । का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव॰ उन्हें उचित ।मय पर ंतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। ।थ ही बच्चों के जन्म में भी ।मान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग॰ करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त n और । के पुत्र एवं कन्या ंतति की ंख्या ।मान होगी।

प्रसव के विषय में । के मन में पहले॰ ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन । को इ। विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा ।मान्य रूप॰ गर्भावस्था का ।मय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में । को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा ुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म ेने में ।फल होंगी। ।थ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष॰ n और । सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता॰ उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। ।थ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य ।म्पन्न नहीं करेंगे। इ। प्रकार n और । का पारिवारिक जीवन ुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

। के अपने ।। से ।मान्यतया अच्छे ंबध रहेंगे तथा ।। भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। । भी अपनी ।। को माता के ।मान व्यवहार एवं ।म्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर ।मस्या का परस्पर ।मंजस्य॰ ।माधान करने में ।मर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ।सुर भी उनकी॰वा तथा आदर के भाव॰ प्रसन्न रहेंगे तथा । भी अपनी ओर॰ उनकी॰वा ुश्रूषा करने के लिए ।र्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन ेवर एवं ननदों॰ उन्हें यथोचित ।म्मान तथा ।हयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर ूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त ॥। ससुर का। को ।सुराल में पूर्ण स्नेह तथा ।हयोग प्राप्त होगा तथा वे ।च्चे मन। उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

n तथा ॥। के ।बधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण ।ोनों के मध्य वैचारिक मतभेn रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यिn n तथा इनकी ॥। आपसी ।मंजस्य तथा बुद्धिमता। व्यवहार करें तो ।बधों की मधुरता में वृद्धि हो ।कती है।

लेकिन ।सुर के ॥थ में n के ।बध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान ।म्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। ॥थ ही उनसे पिता के ।मान ही व्यवहार करेंगे। ॥थ ही वे भी n को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। n समय ।मय पर अपने ।सुर। आवश्यक तथा बहुमूल्य ।लाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु ॥ले तथा ॥लियों के ॥थ में ।बधों में तनाव तथा मतभेn रहेंगे तथा एक ूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आप। में स्नेह ।हयोग तथा ।हानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इ। प्रकार ।माान्य रूप। ।सुरालवालों का ृष्टिकोण n के प्रति अनुकूल ही रहेगा।